दिनांक :- 28-07-20

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फ़ारूक़ आज़म (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- प्रथम खंड (कला)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

इकाई :- तृतीय

पत्र :- प्रथम

अध्याय :- गुप्त काल

स्त्री: स्त्रियों की अवस्था में सामान्यतः गिरावट आई। बाल विवाह का प्रचालन प्रारंभ हुआ सामान्यतः 12-13 वर्षों में लड़कियों की शादी होती थी।

याज्ञवल्क्य स्मृति में लड़कियों के उपनयन एवं वेदाध्ययन का निषेध किया गया है। नारद एवं पराशर विधवाविवाह का समर्थन करते हैं परंतु बृहस्पति द्वारा इसका विरोध किया गया है।

Scanned with CamScanner

विष्णु याज्ञवल्क्य एवं बृहस्पति तथा कात्यायन विधवा को संपूर्ण संपत्ति की स्वामिनी मानते हैं जबकि मनु, नारद इसका विरोध करते हैं। नारद ने राजा से अपेक्षा रखी है कि वह विधवा स्त्री का लालन पालन करे तथा इसे उसने सनातन धर्म कहा है।

प्रा० के भानुगुप्त के एरण अभिलेख से सती प्रथा का प्रथम पुरातात्विक साक्ष्य मिलता है, जब गोपराज नामक सेनापति की पत्नी अपने पति के साथ सती हो जाती थी।

फाहियान और ह्वेनसांग पर्दा प्रथा की चर्चा नहीं करते हैं परंतु कालीदास के अभिज्ञानशाकुन्तलम में अवगुंठन शब्द का प्रयोग किया गया है।

इससे यह ज्ञात होता है कि संभ्रांत परिवार की महिलाएँ पर्दा करती थी। उच्च वर्ग की स्त्रियों को थोड़ी शिक्षा दी जाती थी। अमरकोष में शिक्षिकाओं के लिये उपाध्याय, उपाध्यायी

तथा आचार्या शब्द आया है। काव्यमीमांशा का ज्ञाता कहा गया है। देवदासी प्रथा भी प्रचलित थी। कालीदास के मेघदूत में महाकाल (उज्जैन) मंदिर में रखे जाने वाली देवदासियों की चर्चा है परंतु देवदासी प्रथा का प्रथम साक्ष्य अशोक के कुछ ही दिनों के बाद नागार्जुन के पास रामगढ़ से प्राप्त एक गुफा अभिलेख में मिलता है। उस काल में वेश्याओं का भी अस्तित्व था। काम सूत्र में गणिकाओं के प्रशिक्षण की बात की गई। मुद्राराक्षस से यह ज्ञात होता है कि उत्सवों के समय वेश्याएं सड़क पर आ जाती थी।

गुप्तकालीन कला एवं साहित्य :- गुप्तकाल में कला, वास्तु कला एवं साहित्य का क्लासीकीय माडल विकसित हुआ। गुप्त काल में मंदिर निर्माण कला की शुरुआत हुई। आगे चल कर इस कला में और सुधार हुआ।

गुप्तकालीन मंदिरों में तकनीकी एवं निर्माण संबंधी

अनेक विशेषताएं है। मंदिरो का प्रथम गर्भगृह से होता था। इस गर्भगृह मे ही मूर्ति स्थापित की जाती थी यहाँ तक पहुँचने के लिये सभाभवन होकर एक ढलान होता था। सभाभवन का द्वार एक ड्योढ़ी से निकलना था। सभाभवन के चारो तरफ प्राचीरयुक्त आँगन होता था जिसमें अन्य अनेक पूजा स्थल स्थापित होते थे इस काल के मंदिर की छते समतल होती थी परंतु मंद सौर अभिलेख मे दशपुर के मंदिर को अनेक शिखर वाला बताया गया है।

मंदिर का निर्माण चबूतरे के ऊपर होता था जिसके ऊपर जाने के लिये चारो तरफ सीढ़ियाँ निर्मित होती थी।

द्वार तथा स्तंभ अलंकृत होता था। द्वारपाल के स्थान पर गंगा यमुना की प्रतिमाएँ निर्मित रहती थी चौखट पर शंख तथा पद्म भी बनाये जाते थे। इसका उल्लेख मेघदूतम

Scanned with CamScanner

(कालीदास) में है। बाराहमिहिर ने मंदिरों के द्वारों को शुभ आकृतियों द्वारा अलंकृत करने का विवरण दिया है।
गुप्तकाल के मंदिर सामान्यतः ईंट या लकड़ी के स्थान पर पत्थर से निर्मित होने लगे थे। स्वतंत्र मंदिरों का निर्माण मूर्ति पूजा की परिपाटी के कारण आवश्यक हो गया था। धीरे-धीरे मुख्य मूर्ति के आस-पास सहायक देवताओं की मूर्तियाँ स्थापित होने लगी जो सामंवादी राजनीतिक पद्धति के ही अनुकूल थी। गुप्तकाल में अनेक मंदिरों के अस्तित्व का पता चलता है। उदाहरण के लिए: भूमरा का शिव मंदिर (नागोद) तिगवा का विष्णु मंदिर (जबलपुर) नचनाकुठार का पार्वती मंदिर, देवगढ़ का दशावतार मंदिर खोह का मंदिर भीतरगाँव का मंदिर, सिरपुर का लक्ष्मण मंदिर, लड़खान का मंदिर, दर्रा का मंदिर, उदगिरी का विष्णु मंदिर (विदिशा) भीतरगाँव का मंदिर तथा सिरपुर का लक्ष्मण

मंदिर ईंटों से निर्मित है। भीतरगाँव के मंदिरों में यथार्थ मेहराब प्रयोग मिलता है। देवगढ़ का मंदिर दशावतार मंदिर गुप्तकालीन मंदिरों में सर्वोत्तम है। इसमें 12 मीटर ऊँचा शिखर है जो संभवतः भारतीय मंदिर स्थापत्य में शिखर का प्रथम उदाहरण है।

गुप्त स्थापत्य ने नागर शैली का आधार तैयार किया।

मूर्तिकला : गुप्तकालीन मूर्ति निर्माण कला मथुरा कला परम्पराओं में गुणात्मक विकास का प्रतिनिधित्व करती है। मथुरा कला की मूर्तियों में जहाँ शारीरिक क्षमता के प्रदर्शन पर अधिक बल है वहीं गुप्त कालीन मूर्तियाँ हल्की, चिकनी एवं मननशील हैं।

गुप्तकालीन प्रमुख मूर्तियों में देवगढ़ के दशावतार मंदिर में स्थित विष्णु की प्रतिमा, काशी से प्राप्त गोवर्धन पर्वत को गेंद के समान उठाये हुए कृष्ण मूर्ति, एरण की वराह मूर्ति, सारनाथ की बैठी हुई अवस्था

मे बुद्ध मूर्ति। सारनाथ की बुद्ध मूर्ति गुप्त कालीन मूर्तिकला सर्वोत्तम नमूना है। इसका निर्माण चुनार के बलुआ पत्थर से किया गया है।

उदयगिरि मे यक्षी की प्रतिमा भी उल्लेखनीय है। इस काल मे गंगा तथा यमुना को नारी रूप मे प्रस्तुत किया गया है।

चित्रकला:- वात्सायन के कामसूत्र के अनुसार गुप्त युग मे चित्रकला काफी विकसित थी। चित्रकला की गणना 64 कलाओं मे की गई है।

गुप्तकालीन चित्रकला का सर्वोत्तम नमूना अजंता से प्राप्त हुआ है। तकनीकी दृष्टि से अजंता के भित्ति चित्र विश्व मे सर्वोच्च स्थान रखते है। अजंता की गुफाओं की खोज 1824 मे जनरल सर जॉन्स ने की थी। इन गुफाओं को गुफित्र कि दृष्टि से 1 से लेकर 29 तक बांटा गया है गुफा संख्या 9,10,19,26,29 चैत्य गृह है। यहां के चित्रों मे प्रमुख है।